सौ दिन मोदी सरकार के, जनता के लिए 'बाबाजी का ठुल्लू'

मनोज कुमार झा

अब संभवत: नरेंद्र मोदी सरकार का 'हनीमून' पीरियड समाप्त हो गया है। सरकार के सौ दिन पूरे हुए, वहीं 5 सितम्बर को डॉ. राधाकृष्णन के जन्मदिवस पर मनाये जाने वाले शिक्षक दिवस को 'गुरूदिवस' में बदल कर देश भर के स्कूली छात्रों को संबोधित करने के अभिनव प्रयोग के दौरान नरेन्द्र मोदी ने यह इशारा किया कि वे अगले दस वर्षों तक प्रधानमंत्री पद पर काबिज रहेंगे।

देश में वैकल्पिक राजनीतिक शक्तियों के सिरे से अभाव के कारण नरेन्द्र मोदी का यह दावा संभव है सच में भी बदल जाए, पर उनके दाहिने हाथ माने जाने वाने नवनियुक्त भाजपा अध्यक्ष की अपने पार्टी नेताओं कार्यकर्ताओं को सलाह है कि वे चुनाव जीतने के लिए 'मोदी लहर' के भरोसे न रहें। उनका मानना है कि अब ऐसी कोई लहर नहीं है और इसका ठोस आधार है उत्तराखंड और बिहार उपचुनाव के परिणाम, जहां भाजपा को शिकस्त मिली है।

यह एक खास बात है कि बहुत जल्दी ही आम मोदी समर्थकों का भरोसा भी इस सरकार से उठता जा रहा है। इसकी वजह है, सरकार बनते ही इसकी धुर पूंजीपरस्त नीतियों की वजह से महंगाई सातवें आसमान से भी कहीं ऊपर पहुंच गई है और इस दौरान मोदी ने ढपोरशंखी घोषणाऐं करने के सिवा और कुछ नहीं किया है। जनता के पास कोई चारा नहीं है। साथ ही, उसकी सहन शक्ति भी असीम है। ऐसे में, मोदी बेफ़िक्र भाव से सत्ता के ढांचे को अपने निजी प्रभुत्व के लिए अनुकूल बनाने में लगे हुए हैं। वे सरकार एवं पार्टी संगठन के स्तर पर कई ऐसे हेरफेर कर रहे हैं, ताकि पूर्ण रूप से व्यक्तिगत प्रभुसत्ता स्थापित कर लें। देश-दुनिया के इतिहास, भूगोल और संस्कृति से नावाकिफ़ यह व्यक्ति इसके लिए असत्य के प्रचार का सहारा ले रहा है और हिटलर के कुख्यात प्रचारमंत्री गोयेबल्स का अनुसरण कर रहा है।

बहरहाल, लोग़ों को यह अहसास हो रहा है कि मोदी सरकार उनकी बुनियादी समस्याओं का हल नहीं कर सकती, पर अब क्या हो सकता है! महज 31 फ़ीसद वोटरों का समर्थन हासिल कर बहुमत से

कॉरपोरेट जगत खुश है, अमेरिका खुश है, जापान खुश है, इजरायल खुश है, दंगाई, बलात्कारी, शंकराचार्य और तमाम गिरहकट खुश हैं तो सरकार चलती रहेगी, बेशक जनता नाखुश और असंतुष्ट रहे। मोदी जापान को गीता का ज्ञान दे रहे हैं और विदेशी धरती से धर्मनिरपेक्षतावादियों पर कटाक्ष करने की हिमाकत की तो इसलिए, क्योंकि वे जानते हैं कि दुनिया में उनकी पहचान कट्टर हिंदूवाद के राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में है और यह धार्मिक कट्टरता भी तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की तरह जनतंत्र के नाम पर लूटतंत्र को मजबूत बनाने का महज एक औज़ार है।

सत्ता में आई यह सरकार अगले पांच साल तक जनता की छाती पर मूंग दलने का हक़ रखती है, जनता बिलबिलाती रहे अपनी बला से। मोदी की सत्ता को फ़िलहाल कहीं से कोई चुनौती नहीं है।

कॉरपोरेट जगत खुश है, अमेरिका खुश है, जापान खुश है, इजरायल खुश है, दंगाई, बलात्कारी, शंकराचार्य और तमाम गिरहकट खुश हैं तो सरकार चलती रहेगी, बेशक जनता नाखुश और असंतुष्ट रहे। मोदी जापान को गीता का ज्ञान दे रहे हैं और विदेशी धरती से धर्मनिरपेक्षतावादियों पर कटाक्ष करने की हिमाकत की तो इसलिए क्योंकि वे जानते हैं कि दुनिया में उनकी पहचान कट्टर हिंदूवाद के राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में है और यह धार्मिक कट्टरता भी तथाकथित धर्मनिरपेक्षता की तरह जनतंत्र के नाम पर लूटतंत्र को मजबूत बनाने का महज एक औज़ार है।

यह ग़ौर करने वाली बात है कि मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद देश में दंगों की बाढ़-सी आ गई है, खासकर उत्तरप्रदेश में जहां सत्ता पर भाजपा की नज़र है, दंगे करवाने में नाम कमा चुका अमितशाह साफ़ कहता है कि दंगे होंगे तो भाजपा की जीत होगी। यही अमितशाह, जो अब भाजपा अध्यक्ष बन गया है, यूपी का चुनाव प्रभारी था और यूपी में भाजपा को मिली भारी जीत का श्रेय इसी की सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की नीति को दिया जा रहा है। अमितशाह हर उस राज्य में जहां चुनाव होने हैं, सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति को अंजाम देने में दिन-रात एक किए हुए है। इसके साथ ही, योगी आदित्यनाथ भी लगातार विषवमन कर रहा है। उसने कहा है कि मुसलमान हिदुओं की एक लड़की को भगाता है तो उनकी सौ भगाओ। यही नहीं, योगी आदित्यनाथ ने मुसलमानों को धमकी देते हुए खुलेआम कहा था कि उनके एक हाथ में माला है तो दूसरे में भाला है। 'लव ज़िहाद' का नया शिगूफ़ा छेड़ा गया है और संघ परिवार द्वारा पूरे देश में मुसलमानों के ख़िलाफ़ घृणा का माहौल बनाने की कोशिश की जा रही है।

आपत्तिजनक बयान देनेवालों और सांप्रदायिक दंगे भड़काने वालों के विरुद्ध कोई कार्रवाई भला कैसे हो सकती है, जब शासक पार्टी के अध्यक्ष पर ही दंगे भड़काने के आरोप लगे हों और अदालत द्वारा जिसे पहले गुजरात से तड़ीपार किया जा चुका हो।

मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दंगाई खुलकर खेलने को तैयार दिखाई पड़ते हैं। इन्हें जहां भी मौका मिल रहा है, आग़ लगाने से बाज़ नहीं आ रहे।

मोदी भाजपा में अधिनायक बनकर उभर चुके हैं। इनके सामने अन्य भाजपाई नेताओं की बोलती बंद है। सबको उनकी औकात बता दी गई है। मोदी का कोई मंत्री स्वतंत्र रूप से निर्णय नहीं ले सकता। और सरकार के हर फ़ैसले पर संघ की मुहर लगनी जरूरी होती है।

भ्रष्टाचारी खत्म करना और काला धन वापस लाने जैसी घोषणाएं झूठ का गुब्बारा साबित हुईं। स्वयं सरकार में बड़े-बड़े भ्रष्टाचारी, बलात्कारी और कालाबाज़ारी मौजूद हैं। मोदी का सारा ध्यान हवाई किले बनाने, हवाई घोषणाएं करने और देश-विदेश में सुनियोजित आत्मप्रचार पर लगा हुआ है। मोदी एक ऐसी सरकार के मुखिया हैं, संसद में जिसका कोई विरोधी दल नहीं। मोदी को विरोध पक्ष से सख़्त नफ़रत है। उन्हें सभी जी-हुजुरिया चाहिए, यहां तक कि अदालत भी। वो चुन-चुन कर हर संस्था में ऐसे लोग़ों को बैठा रहे हैं, जो संघ की 'हिंदूराष्ट्र' की विचारधारा का समर्थन करते हों।

मोदी के सामने क्षत्रपों की बोलती बंद हो गई है। उत्तरप्रदेश में मुलायम-अखिलेश पर ख़तरा मंडरा रहा है। मोदी-अमितशाह की जोड़ी ने यूपी को दंगे, लव ज़िहाद और हिंदुत्व की प्रयोगशाला बना दिया है। बिहार में उपचुनाव में नीतीश कुमार को मोदी के असर की काट के लिए अपने धुर विरोधी लालू प्रसाद और कांग्रेस से समझौता कर महागठबंधन बनाना पड़ा, बावजूद उसके आशानुरूप सफलता नहीं मिली। कई लोग मुलायम को मायावती से गठबंधन करने की सलाह दे रहे हैं, पर मायावती इसके लिए तैयार नहीं। वहीं, पश्चिम बंगाल में शेरनी कही जाने वाली ममता बनर्जी के तेवर भी ढीले पड़ रहे हैं। अमितशाह ने यूपी के साथ ही बंगाल फ़तह की भी योजना बना रखी है। यही कारण है कि अब ममता बनर्जी वामपंथियों तक से हाथ मिलाने को तैयार हो गई हैं, जबकि राष्ट्रीय राजनीति में अब उन्हें कोई कौड़ी के भाव भी पूछने को तैयार नहीं। जहां तक कांग्रेस का सवाल है, उसके दिन पूरे हुए दिखते हैं।

मोदी सरकार और संघ का पूरा ध्यान अब यूपी के उपचुनावों, महाराष्ट्र, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा आदि राज्यों में होने वाले चुनाव पर है। कश्मीर में अमितशाह ने 'मिशन 44' प्लान सामने रखा है। वहां भी नए किस्म के सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति को अंजाम देने की कोशिश है। इससे पहले से ही अशांत चल रहे कश्मीर में और भी अशांति पैदा हो सकती है।

देखा जाए तो, जनता को लूटने वाले गिरोह क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के रूप में उभरकर और ताकतवर होकर केंद्र सरकार पर अपना दबदबा कायम करते थे, मोदी के सामने वे पिद्दी साबित हो रहे हैं। वे छोटे लुटेरे सरदार थे, जिन्हें अब बड़े लुटेरे और हर तरह से संगठित गिरोह के केंद्रीय सत्ता पर काबिज़ हो जाने से संभवत: मुंह की खानी पड़े।

इस बीच जनता बेहाल है। उसे किसी भी तरह की कोई राहत नहीं और राहत मिलने की न उम्मीद है। इसकी जगह, दंगों, बढ़ते सांप्रदायिक वैमनस्य, लव ज़िहाद जैसी नाटकबाजियों और महिलाओं पर हो रहे ज़ुल्म में बढोत्तरी से आम जनता की परेशानी बढ़ती ही जा रही है।

कांग्रेस और अन्य दलों की सरकारें भी मज़दूर व आम जन की विरोधी ही थी, मोदी सरकार की खासियत ये है कि यह बर्बर है। इस सरकार की नीतियां इस हद तक श्रमिक विरोधी हैं कि भाजपा के मज़दूर संघ को भी अपनी दुकान बचाये रखने के लिए इसका औपचारिक विरोध करना पड़ा।

भारत में हिंदू संप्रदायवाद हमेशा से एक बड़ा ख़तरा रहा है। अब यह ख़तरा इसलिए भी गंभीर हो गया है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने केंद्र की सत्ता ही हथिया ली। इसके मूल में कारण यह है कि भारतीय गणराज्य सच्चे अर्थों में कभी धर्मनिरपेक्ष रहा ही नहीं। सांप्रदायिक चरित्र को छद्म धर्मनिरपेक्षता की ओट मिली रही।

अब खुले संप्रदायवादी आ गए हैं और नंगा नाच दिखा रहे हैं। लेकिन अब इस ख़तरे का नया पहलू भी सामने आया है। अंर्तराष्ट्रीय इस्लामिक आतंकवादी ताकतों ने जो साम्राज्यवादी शक्तियों, खास कर अमेरिका की औलाद हैं और अंतत: उसके हितों को ही पूरा करती हैं, नरेन्द्र मोदी को मुसलमानविरोधी घोषित कर दिया है और अब ज़िहाद के लिए अल-कायदा ने भारत में दस्तक दे दी है। अल-कायदा प्रमुख अल जवाहिरी का वीडियो संदेश जारी हो चुका है।

क्या राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में इतना दम है कि इन इस्लामिक ज़िहादियों से टक्कर ले? इनसे तो इनका आका अमेरिका भी घबराता है, क्योंकि ये 'भस्मासुर' हैं।

गतांक की चीर-फ़ाड़

मज़दूर मोर्चा के 1-15 सितम्बर 2014 के अंक में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व स्थानीय मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण लेख पढ़ने को मिले। भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिये भाजपा व मोदी सरकार द्वारा किए जा रहे प्रचार के ढोंग का लेख 'मोदी-मंत्र न खाऊंगा न खाने दूंगा' में पर्दाफाश किया गया है। वास्तव में मोदी सरकार व भाजपा, भ्रष्टाचार के मामले में शोर मचाने में लगी है, तो दूसरी तरफ़ अपनी ही पार्टी के भ्रष्टाचार में आरोपित व्यक्तियों को अपने गले लगाए हुए हैं तथा भ्रष्टाचारियों विशेषकर पूंजीपतियों व कॉरपोरेट घरानों के विरुद्ध कोई ठोस कार्यवाही प्रारम्भ नहीं की गई है क्योंकि यही लोग तो मोदी व भाजपा के कट्टर समर्थक हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण है मोदी सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार दिल्ली की सरकार केंद्रीय सरकार के अधिकारियों (जैसे मुकेश अम्बानी, विरप्पा मोइली आदि) के ख़िलाफ़ कोई केस दर्ज नहीं कर सकती। एम्स के ईमानदार एवम् निष्ठावान अधिकारी संजीव चतुर्वेदी को भाजपा व आर एस एस के वरिष्ठ पदाधिकारी जे पी नड्डा के दबाव में पद से हटा दिया क्योंकि भ्रष्टाचार में आरोपित एम्स के जिन अधिकारियों के विरुद्ध चतुर्वेदी ने कार्यवाही शुरू की थी उनमें से कुछ जे पी नड्डा के नज़दीकी हैं।

कर्नाटक के भूतपूर्व भ्रष्टाचारी मुख्यमंत्री येदुयुरप्पा को भाजपा का उच्च पदाधिकारी बनाया गया है। जब भी चुनाव आते हैं तो सभी पार्टियों के नेता व कार्यकर्ता बरसात की मेढकों की तरह उछल-कूद शुरू कर देते हैं, और जहां उनको ज्यादा मलाई मिलने की उम्मीद होती है उसी पार्टी में चले जाते हैं जबकि उस पार्टी के प्रति उनकी कोई निष्ठा नहीं होती। इस सम्बन्ध में प्रकाशि लेख 'भाजपा टिकट काऊंटर पर धनबल सबसे प्रबल,' 'शिवचरण टटोल रहे हैं मुनाफ़ा कहां मिलेगा' तथा 'प्रवेश मेहता चले चौटाला की ओर तो शारदा भागी भाजपा की ओर' बिल्कुल समीचीन, उपयुक्त व समयानुकूल है।

लेख 'निजी बीमा कम्पनियों को भारत सरकार ने दी लूट की छूट' में निजी कम्पनियों तथा आर डी ए में बैठे अधिकारियों की आपस में सांठगांठ से बीमा धारकों के हो रहे शोषण की असलियत सामने लाकर प्रशंसनीय कार्य किया गया है। दिल्ली विधानसभा को संभावित चुनाव व सरकार के गठन के सम्बंध में भाजपा, आप व कांग्रेस के समय-समय पर बदलते रूख को लेख 'हम चुनाव नहीं चाहते...कोई चुनाव नहीं चाहता' में स्पष्ट किया गया है। इन सब विधायकों व पार्टियों को आशंका है कि मौजूदा हालात में यदि चुनाव होते हैं तो क्या वर्तमान विधायक दुबारा चुनकर आ सकेंगे और क्या उनकी पार्टी को बहुमत मिल सकेगा? इसलिए विधान सभा का चुनाव कराने के लिये शोर कराने के बावजूद वास्तव में कोई चुनाव नहीं चाहता। इसलिये भाजपा अपनी केन्द्रीय सरकार के सहयोग से दिल्ली में सरकार बनाने के लिए जी-तोड़ कोशिश कर रही हैं, हालांकि उसके पास विधानसभा में आवश्यक बहुमत नहीं है।

साहित्यकार प्रेमचंद के उपन्यास 'नशा' का वर्तमान राजनीति के संदर्भ में लेख 'सत्ता का नशा' में सटीक विश्लेषण किया गया है। उपन्यास 'नशा' आज भी प्रासंगिक है। नरेन्द्र मोदी का तानाशाही व्यक्तित्व व्यवहार तथा मोदी सरकार द्वारा प्रशासन के हर क्षेत्र का भगवाकरण, धार्मिक आधार पर साम्प्रदायिक उन्माद फ़ैलाना तथा आर एस एस का राजनीति में खुला हस्तक्षेप का लेख 'अच्छे दिनों के नाम पर जनता का उल्लू बनाया- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का कठपुतला है नरेन्द्र मोदी' में सटीक विश्लेषण किया गया है। वास्तव में प्रधानमंत्री मोदी अपने मन्सूबों को पूरा करने के लिए संघ का इस्तेमाल कर रहे हैं और जब सत्ता व भाजपा पर उनका पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो जाएगा तब मोदी गुजरात की तरह केन्द्र में भी संघ को दर किनार करने में देर नहीं लगाएंगे।

स्तंभ 'तुर्की-ब-तुर्की' में एम्स के सी वी ओ संजीव चतुर्वेदी की नियुक्ति को असंवैधानिक बताते हुए केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन द्वारा हटाए जाने पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा किया गया है कि क्या चतुर्वेदी मोदी की चोरी में सहायक था या मोदी की राह में रोड़ा? एक ताज़ा जांच रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि चतुर्वेदी के विरुद्ध कोई जांच पेंडिग नहीं है। इस रिपोर्ट के सम्बन्ध में हर्षवर्धन ने चुप्पी साध रखी है क्योंकि चतुर्वेदी को हटाने के पीछे हर्षवर्धन के पास कोई उपयुक्त दलील नहीं है। अन्य प्रकाशित लेख भी उच्च स्तरीय तथा प्रेरणादायक हैं

प्रो. जुगल किशोर गुप्ता

तुर्की-ब-तुर्की

''मोदी सारे देश के प्रधानमंत्री हैं। उनके समारोह में मैं कवितापाठ करने जाऊंगा।''

(मोदी के जन्मदिन पर कवितापाठ करने का औचित्य 'आप' के नेता कुमार विश्वास ने कुछ इस तरह बयाँ किया। साथ ही यह भी जोड़ा कि कविता पाठ से उनकी कमाई होती है और मोदी के जन्म दिन समारोह का उद्देश्य गौशाला के लिये पैसा एकत्र करना है।)

हमारा कहना है:-

यह तो ठीक है कि मोदी देश के प्रधानमंत्री है। लेकिन कुमार महोदय जब आप उनके जन्म दिन पर उनके चेले-चांटों द्वारा आयोजित समारोह में कवितापाठ करेंगे तो उसमें मोदी का यशोगान ही तो करोगे। विशेषकर जब आपने इसके एवज में मोटी रकम ले रखी है।

आपकी भ्रष्टाचार विरोधी पार्टी लाइन का क्या हुआ? लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान आपने मोदी पर कटाक्ष किया था कि जब वे 5000 करोड़ रुपये चुनाव प्रचार पर खर्च कर रहे हैं तो पैसे देने वालों को सत्ता में आने के बाद मोदी 5 लाख करोड़ तो कमवायेंगे ही। क्या अपके कवितापाठ में यह ज़िक्र आयेगा?

आपको यह भी ध्यान दिला दें कि आप जिस पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं, उसने अपनी पूरी लड़ाई लोकपाल बनाने के लिए लड़ी थी। यह लोकपाल प्रधानमंत्री मोदी के एजेंडे पर है भी कि नहीं? ध्यान रहे कि 12 साल गुजरात का मुख्यमंत्री रहने के दौरान मोदी ने राज्य में लोकायुक्त नहीं लाने दिया था।

विश्वास महोदय क्या आप बतायेंगे कि मोदी इस देश की किस जनता के प्रधानमंत्री हैं? क्या उनका रहन-सहन, शान-बान, चाल-ढाल, इस देश के आम आदमी जैसी है? अपने शासन के चौथे महीने में प्रवेश कर चुकी उनकी सरकार ने कार्पोरेट समुदाय को करों में छूट देने से लेकर देश की भौतिक संपदा औने-पौने बेचने की मुहिम चला रखी है। जबकि आम आदमी पर महंगाई, भ्रष्टाचार और कालेधन की भयंकर मार बदस्तूर जारी है। क्या इन बातों का ज़िक्र आप अपनी कविता में कर पायेंगे?

आखिर में हम यह स्पष्ट ही कह दें कि एक चारण केवल विरुदावलियां ही गा सकता है। करोगे तुम भी वही मोदी के जन्म दिन पर। उनकी लूट-कमाई में से कुछ जूठन मिलने का जुगाड़ तुम्हारा भी होता दिख रहा है।